हृदय और धड़कन

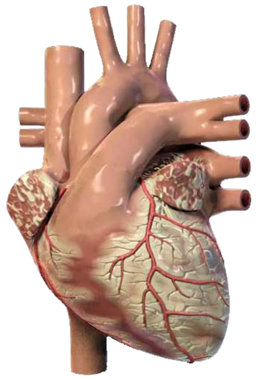

वर्ष-4, अंक-40, अप्रैल 20, 2013

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences

Price Rs. 5/-

कार्डियोलॉजिस्ट

डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666
डॉ. सत्य गुप्ता	+91-99250 45780
डॉ. विनीत सांख्ला	+91-99250 15056
डॉ. गुणवंत पटेल	+91-98240 61266
डॉ. केयूर परीख	+91-98250 66664
डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107
डॉ. उर्मिल शाह	+91-98250 66939
डॉ. हेमांग बक्षी	+91-98250 30111
डॉ. अनिश चंदाराणा	+91-98250 96922

कार्डियक सर्जन

डॉ. धीरेन शाह	+91-98255 75933
डॉ. धवल नायक	+91-90991 11133
डॉ. दीपेश शाह	+91-90990 27945

पिडियाट्रिक और स्ट्रकचरल हार्ट सर्जन

डॉ. शौनक शाह	+91-98250 44502
डॉ. आशुतोष सिंह	+91-82380 01976

वास्क्युलर और एन्डोवास्क्युलर सर्जन

डॉ. सुजल शाह	+91-91377 88088

कार्डियक एनेस्थेटिस्ट

डॉ. निरेन भावसार	+91-98795 71917
डॉ. हिरेन धोलकिया	+91-95863 75818
डॉ. चिंतन शेठ	+91-91732 04454

पिडियाट्रिक कार्डियोलॉजीस्ट

डॉ. कश्यप शेठ	+91-99246 12288
डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107

निओनेटोलोजीस्ट और पीडियाट्रीक इन्टेन्सीवीस्ट

डॉ. अमित चितलीया	+91-90999 87400

कार्डियाक इलेक्ट्रोफिजियोलोजीस्ट

डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666

हृदय के विद्युतप्रवाह में खराबी

हमने शुरु में हृदय में ही बसती बिजली (इलेक्ट्रिसिटी - Electricity) की विस्तार से चर्चा की। इस रचना में सायनो-एट्रियल नोड (एस.ए.नोड) नामक विद्युतप्रवाह उत्पन्न करने वाले हृदय के भाग का समावेश होता है। एस.ए.नोड हृदय की धड़कन की गति निश्चित करता होने के कारण इसे 'पेसमेकर' (हृदय की धडकन की गति निश्चित करने वाला साधन) भी कहते हैं।

हृदय के पेसमेकर में से विद्युत का प्रवाह शुरु होकर हृदय के दूसरे एक महत्त्वपूर्ण भाग द्वारा हृदय के अन्य सभी भागों में बहता है, और अन्त में यह विद्युत प्रवाह हृदय के स्नायुओं में बहता है। एक मिनट में लगभग ७०-८० बार ऐसे विद्युत प्रवाह पैदा होते हैं। हर विद्युतप्रवाह की उत्पत्ति को बिजली का 'इम्पल्स' कहते हैं। हर इम्पल्स एक धड़कन बनती है, इसलिए अपने हृदय की धड़कन की गति ७०-८० धड़कन प्रति मिनट होती है। हृदय के अंदर के इस विद्युत प्रवाह को हम अनुभव नहीं कर सकते क्योंकि यह बहुत कमजोर होता है। इनका वोल्टेज़ भी मिलिवॉल्ट्स में नापा जाता है। कभी-कभी हृदय के विद्युत प्रवाह में रुकावट आ जाती है।

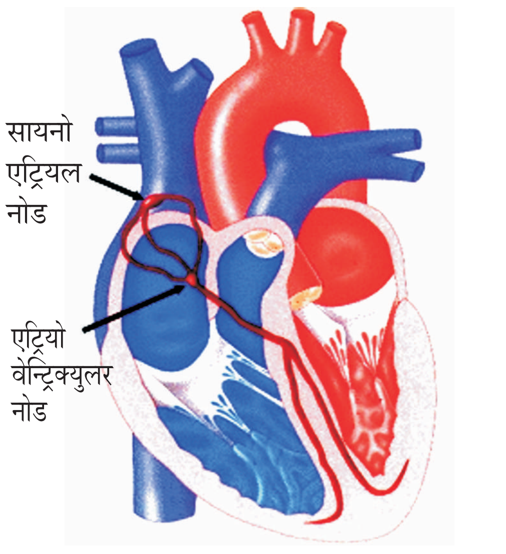

सायनोएट्रियल नोड

एट्रियो वेन्ट्रीक्युलर नोड

सामान्य रूप से हृदय के स्नायु विद्युत प्रवाह के अच्छे वाहक (Good Conductor) होते हैं, पर हृदयरोग के हमले के बाद हृदय के कुछ स्नायुओं का कुछ भाग निर्जीव होकर अपना वाहक

गुण खो देते हैं। हृदय के नुकसान वाले स्नायुओं में से विद्युत प्रवहन नहीं हो सकता। परिणाम स्वरूप जन्म होता है अनियमित धड़कनों का, विद्युतप्रवाह में अवरोध अर्थात ज्यादा धीमी या ज्यादा तेज हृदय की धड़कन।

रोगी : 'डॉक्टर मेरे दिमाग के फोटो में क्या दिखता है?'
डॉक्टर : 'कुछ नहीं।'

कभी पेसमेकर के ऊपर असर पड़ता है और हृदय इतनी तेजी से धड़कने लगता है और यह स्थिति जीवन को खतरे में डाल सकती है। इस समय हम हृदयरोग विशेषज्ञों में शामिल इलेक्ट्रिशियन्स बाजी को संभाल लेते हैं। हृदयरोग की जो शाखा इस तरह से बिजली के परिवर्तनों का इलाज करती है उसे इल्क्ट्रोफिजियोलोजी (इ.पी.) कहते हैं।

एरिधमिया किसे होता है?

हृदय की धड़कन के अनियमित ताल को 'एरिधमिया' कहते हैं। यह बाधा पैदा करने वाले या जानलेवा भी हो सकते हैं। पल्पिटेशन (हृदय की धड़कन का तकलीफों वाला अनुभव, अत्यधिक तेज धड़कन), प्रि - सिन्कोप (चक्कर आने के पहले की स्थिति जैसे (उबकाई आना, ऑंखों के आगे अंधेरा छाना), सिन्कोप (चक्कर के समय की स्थिति, गिर पड़ना, बेहोश हो जाना) के लक्षण वाले रोगियों को एरिधमिया है ऐसी संभावना हो सकती है।

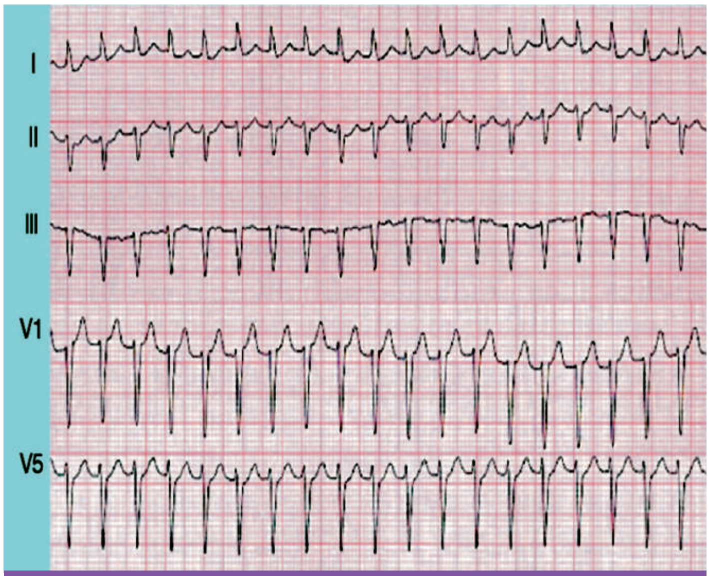

केथलेब में पेसमेकर रखा जाता हैअरिधिमया का ईसीजी

इलेक्ट्रोफिजियोलोजी क्या है?

इलेक्ट्रोफिजियोलोजी स्टडी (ई.पी.एस.) हृदय की धड़कनका निदान करने में सहायक होता है। इसकी कार्यपद्धति कार्डियाक केथेटराइजेशन से मिलती है। कुछ खास प्रकार के केथेटर हृदय के अंदर डाले जाते हैं, और एक अत्याधुनिक कम्प्युटर की सहायता से अलग अलग जगह प्रवाह नापा जाता है। अयोग्य विद्युतप्रवाह उत्पन्न करती जगहों को पहचान कर उनका उद्‌गम ढूंढा जाता है। इससे इलाज की जगह निश्चित हो सकती है।

डॉक्टरों की दुनिया में मेडिकल कोलेज में पढ़ते विद्यार्थियों की बुद्धि बहुत कम होती है ऐसा वरिष्ठ डॉक्टरों का मानना है, इसलिए ऐसे जोक्स मेडिकल कोलेज में चलते हैं।

'बिजली का बल्ब बदलने के लिए कितने आदमियों की जरूरत होती है?'

'चार...! एक बल्ब बदलने कि माहिती पुस्तक पकड़े, दूसरा यह पुस्तक पढ़े, तीसरा उसके हिसाब से बल्ब बदलने की कोशिश करे और चौथा केस बिगड़ने पर प्रोफेसर साहब को बुलाने के लिए तैयार खड़ा हो।'

आर.एफ.ए. क्या है?

ई.पी.एस. करते समय ही हृदय के अंदर एक दूसरा केथेटर डाला जाता है और रेडियोफ्रिक्वेन्सी (आर.एफ.) के द्वारा ठीक से विद्युत उत्पन्न नहीं करने वाली जगहों का इलाज करने में आता है। इसके बाद ना ही अधिक प्रवाह बनता है और ना ही धड़कनें अनियमित होती हैं। इसको आर.एफ. एब्लेशन कहते हैं। पढ़ने में भले ही यह बहुत सरल लगता है पर इस प्रक्रिया की आधुनिकता तो इ.पी. मशीन की नजाकत और उसके साथ जुड़े हुए कम्प्युटर को देखने से ही मालूम पड़ती है। गुजरात के कुछ अस्पतालों में इ.पी. स्टडी और आर.एफ. एब्लेशन रोजाना किये जाते हैं।

ए.आइ.सी.डी.

ऑटोमेटिक इम्प्लान्टेबल कार्डियोवर्टर डिफिब्रिलेटर का ए.आइ.सी.डी संक्षिप्त रूप है, यह एक सुपर पेसमेकर है। हृदय की धड़कन बहुत बढ़ जाए तब यह उपकरण काम में आता है। इसका आकार पेसमेकर जैसा ही है, और इसे चमड़ी के नीचे रखा जाता है।

ए.आइ.सी.डी.

इसके तार (Wires) हृदय के अंदर रखे जाते हैं, जो हृदय की किसी भी खतरनाक चेतावनी या धड़कन को पहचानने और उसका इलाज करने में समर्थ होता है। यह हृदय को अंतरिम झटका (internal shock) देता है। इसके अलावा कमजोर हृदय (३० प्रतिशत से कम पम्पिंग और हृदय की धड़कन की तेज गति (वेन्ट्रिक्युलर टेकिकार्डिया) वाले रोगियों का जीवन बचानेवाला श्रेष्ठ साधन है।

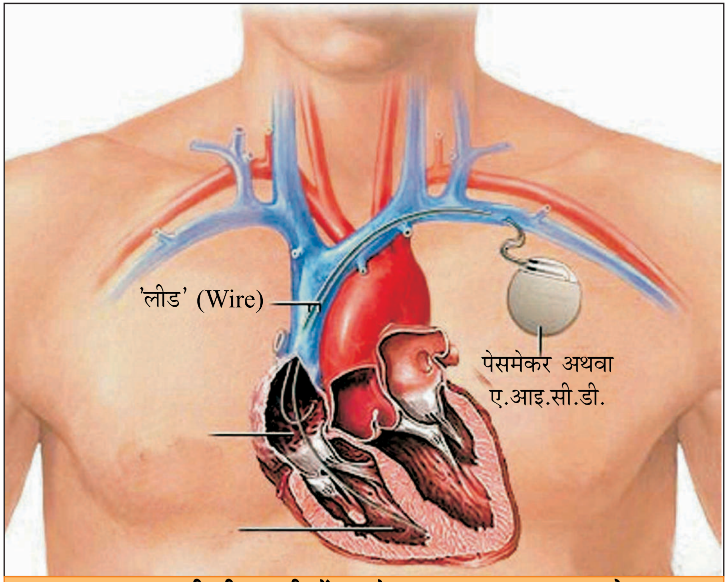

ए.आइ.सी.डी. छाती में उपरोक्त जगह लगाया जाता है

एन्जियोग्राफी सिर्फ 7 सेकन्ड में

विश्व के सबसे तेज एन्जियोग्राफी मशीन (फिलिप्स एक्सपर टेक्नोलोजी) सीम्स में उपलब्ध । इस मशीन में सिर्फ 7 सेकन्डमें एन्जियोग्राफी के फोटो निकलते है ।

एन्जियोप्लास्टी के अच्छे परिणाम के लिये स्टेन्ट बुस्ट टेक्नोलोजी

सीम्स कार्डियाक टीम 27 साल से ज्यादा अनुभव वाली भारत की अग्रीम कार्डियोलॉजी टीममें से एक

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

एम्बयुलन्स और आपातकाल
+91-98244 50000, 97234 50000, 90990 11234

कृत्रिम पेसमेकर्स

कभी कभी अपने काम के लिए हृदय योग्य विद्युत प्रवाह उत्पन्न नहीं कर सकता है, इसके कारण धड़कनें अनियमित व अचानक होने लगती हैं, जिसके कारण चक्कर आना, गिर पड़ना, मूर्छा अथवा बेहोशी आ जाती है, क्योंकि हृदय की धड़कन धीमी पड़ गई होती हैं और इसलिए दिमाग को पर्याप्त रक्त नहीं मिलता है। इस प्रकार के रोग के लिए कृत्रिम उपाय है पेसमेकर।

हृदय का कृत्रिम विद्युत मथक (पावर हाउस) : पेसमेकर (स्टेन्डर्ड माप) इन्टरनल जुगुलर नस

पेसमेकर अलग अलग प्रकार के होते हैं। विद्युत प्रवाह के द्वारा यह धड़कनों को नियमित कर देता है, और उचित सकुंचन करने में हृदय को मदद करता है। आधुनिक पेसमेकर श्रेष्ठ यंत्र है, जो दोनों ही आलिन्दों पर असर करता है। बाय-वेन्ट्रिक्युलर पेसिंग के नाम से जाना जानेवाला यह यंत्र दोनों आलिन्दों को बिना किसी रुकावट के धड़कने में मदद करता है, और भारत में भी उपलब्ध है।

कृत्रिम पेसमेकर

कृत्रिम पेसमेकर एक ऐसा उपकरण है जो हृदय के स्नायुओं को योग्य रूप से संकुचन में मदद करता है। यह बेटरी से चलता है। कई पेसमेकर छाती की त्वचा में स्थाई रूप से लगा दिए जाते हैं, कुछ आपातकाल में उपयोग किए जाते हैं, और उन्हें शरीर के बाहर ही रखा जाता हैं। पेसमेकर में हृदय की ओर विद्युतप्रवाह ले जाने और वापस लाने के लिए तार से जोड़ा जाता है। इन तारों का एक समूह पेसमेकर को हृदय की धड़कनों की हर प्रकार की सूचना भेजता है। बिजली का यह प्रवाह बहुत सूक्ष्म होता है और सामान्यतः इन्हें बिजली की तरंगें या सिग्नल कहा जाता है।

पेसमेकर कब उपयोग किया जाए?

शरीर का प्राकृतिक 'पेसमेकर' तंत्र जब हृदय के स्नायुओं को बिजली की योग्य सूचना भेजना बंद कर दे और हृदय की धड़कनें अनियमित व बहुत कम हो जाएं तब कृत्रिम पेसमेकर का उपयोग होता है।

तंदरुस्त हृदय के कुछ विशिष्ट कोष ('पेसमेपर कोष') हर मिनट नियमित विद्युत संदेश भेजते रहते हैं जिससे हृदय के स्नायु संकुचित होते हैं। हृदय हर मिनट ५० से १०० बार धड़कता है, और शारीरिक प्रवृतियों के अनुरूप इन धड़कनों में कमी या बढ़ोतरी होती है।

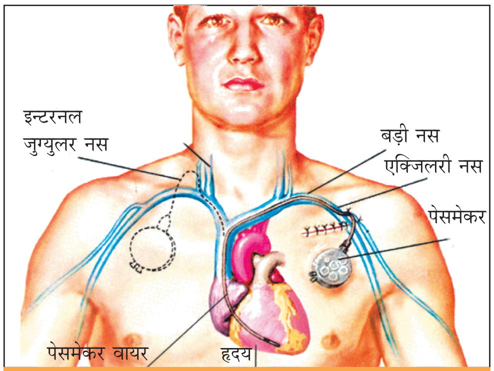

पेसमेकर एक छोटे से ऑपरेशन के द्वारा छाती में रखा जाता है

कई बार दिल का दौरा, दवाएं तथा अन्य रोग हृदय को नुकसान पहुचाते हैं, इस कारण पेसमेकर कोष सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकते। अगर कोष सही तरह से तरंगे नहीं भेज पाते हैं तो हृदय की धड़कनें ज्यादा तेज, कम, अथवा अनियमित हो जाती है। हमें यह महसूस होता है कि हमारा हृदय ज्यादा तेज या धीमा धड़क रहा है। ऐसा भी लग सकता है कि बीच में धड़कन गायब हो रही हैं। जब हृदय अधिक या कम धड़कता है तो वह शरीर को पर्याप्त मात्रा में रक्त पहुचाने में असमर्थ बन जाता है ऐसे समय में सरदर्द, थकान, अथवा बेहोशी का अहसास होता है। कृत्रिम पेसमेकर के द्वारा हृदय की धड़कनों की आदर्श दर को संभाला जा सकता है। पेसमेकर की दर को कम या ज्यादा करने का भी प्रबंध किया जा सकता है।

हृदय की धड़कनों की आदर्श गति का खयाल कृत्रिम पेसमेकर रखता है। और जब धड़कनें निश्चित सीमा से ऊंची चली जाती है, तब पेसमेकर बंद हो जाता है, परन्तु जब धड़कनें बहुत धीरे हो जाती हैं तब पेसमेकर अपने आप शुरु हो जाता है। ऐसे पेसमेकर डिमांड पेसमेकर्स (Demand Pacemakers) कहलाते हैं।

पेसमेकर की देखभाल

पेसमेकर अपनी बेटरी पर चलता है, ओर सामान्यरुपमें इस बेटरी की मर्यादा ७ से १२ साल होती है। जिस प्रकार बेटरी की क्षमता जाचंने के लिए डॉक्टर सलाह देते हैं, उसी प्रकार पेसमेकर की भी नियमित रूप से जांच की जानी चाहिए। यह जाँच एक छोटे से कम्प्युटर के द्वारा की जाती है।

पेसमेकर की बेटरी के पूर्ण उपयोग हो जाने के बाद पेसमेकर व बेटरी दोनों बदलने पड़ते हैं। यह ऑपरेशन सरल है। डॉक्टर चमड़ी के नीचे लगा हुआ पुराना पेसमेकर निकालकर उसमे जोड़े हुए हृदय के तार अलग करके उन्हीं तारों को नए पेसमेकर के साथ जोड़कर पुनः उसे चमड़ी के नीचे रख कर टांके लगाकर घाव को बंद कर देते हैं।

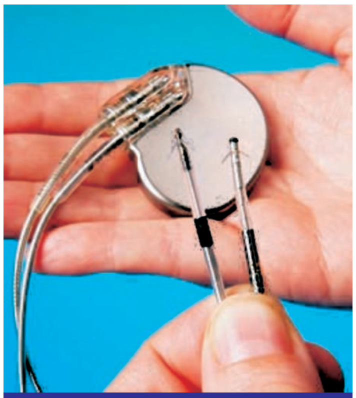

पेसमेकर हाथ में समाया जा सकता है

क्या पेसमेकर से फायदा होता है?

पेसमेकर के द्वारा हृदय की अनियमित धड़कनों को नियमित करने से रोगी को सामान्य जीवन फिर से मिल जाता है। सन १९५० से पेसमेकर बहुत ही सफलतापूर्वक लगाए जा रहे हैं। लाखों व्यक्ति इसे उपयोग में अब भी ले चुके हैं और ले रहे हैं।

पेसमेकर लगे हुए रोगी को अपने आसपास लगे उपकरण व साधनों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है क्योंकि कुछ उपकरण पेसमेकर को नुकसान पहुंचा कर उसका काम बिगाड़ सकते हैं।

कितना सुरक्षित है

- सामान्यतया एक्स-रे का पेसमेकर पर असर नहीं होता है।
- सीबी रेडियो, इलेक्ट्रिक ड्रिल, इलेक्ट्रिक ब्लेन्केट्स, इलेक्ट्रिक शेवर्स, हेम रेडियो, हीटिंग पेड्स, मेटल डिटेक्टर्स, माइक्रोवेव ऑवन, टी.वी. और रिमोट सामान्यरूप से पेसमेकर को नुकसान नहीं पहुंचाते, तथा पेसमेकर की पेसिंग को नहीं बदलते। घर में उपयोग आने वाले उपरोक्त साधन किसी भी चिंता के बिना पेसमेकर के साथ उपयोग किए जा सकते हैं। कुछ मानसिक बीमारीओं में काम में आने वाली इलेक्ट्रोकन्वल्जिव थेरेपी भी पेसमेकर वाले रोगियों को आवश्यकता पड़ने पर दी जा सकती है।
- लिथोट्रिप्सी (किडनी की पथरी को पिघलाने में उपयोग लिये जाने वाले उपकरण के द्वारा किया जाने वाला इलाज) भी पेसमेकर के रोगियों के लिए भी सुरक्षित है।

पेसमेकर के रोगी को ध्यान में रखने योग्य बातें

- रेडिएशन के द्वारा किए जाने वाले कैन्सर के इलाज के समय पेसमेकर के सर्किट को नुकसान पहुंच सकता है।
- पावर उत्पन्न करने वाले साधन, आर्क वेल्डिंग. तथा शक्तिशाली चुम्बक, पेसमेकर के कार्य को प्रभावित कर सकता है।
- शक्तिशाली चुम्बक के उदाहरण हैं, मेग्नेटिक रेसोनन्स इमेजिंग (एम.आर.आइ.) की जांच जिसमे आंतरिक अंगों के चित्रों को बनाने के लिए शक्तिशाली चुम्बकों का उपयोग किया जाता है। पेसमेकर वाले रोगियों को ग्डक्ष की जांच नहीं करवानी चाहिए।
- शोर्टवेव अथवा माइक्रोवेव डायाथर्मी, उच्च फ्रिक्वन्सी व तीव्र सिग्नल्स उपयोग में लिए जाने से पेसमेकर को नुकसान हो सकता है।

इतना अवश्य करें

- अगर पेसमेकर लगा है तो अपने फेमिली डॉक्टर व डेन्टिस्ट को उनकी चिकित्सा लेने से पहले अवश्य सूचित करें।
- अगर आपके पेसमेकर लगा हुआ है तो आपके पास उसकी सूचना देने वाला परिचयपत्र अवश्य रखें जिससे कभी कोई दुर्घटना होने पर तो किसी भी अंजान डॉक्टर को आपके इलाज में सुविधा हो।

एक बार एक रोगी बुखार की दवा लेने डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने किसी से भी पढ़ी नहीं जाए ऐसे अक्षरों में दवाएं लिख दी। रोगी ने चिठ्ठी जेब में रखी और भूल गया। उसके बाद उस रोगी ने दो साल तक हर रोज सुबह ये चिठ्ठी पास की तरह बताकर लोकल ट्रेन में सफर किया।

फिर यह ना पढ़े जाने वाली दवा की चिट्ठी को टिकट के बदले में बताकर दो बार पिक्चर देखा, एक बार संगीत के कार्यक्रम व एक बार सेमिनार में भी हो आया।

इस चिट्ठी को बड़े साहब की सिफारिशी चिट्ठी वताकर प्रमोशन लिया। एक दिन वह चिट्ठी उनकी बेटी के हाथ में आई। उसे लगा वह पियानो के संगीत का नोटेशन है उसने पियानो पर वह धुन बजाकर संगीत विशारद के लिए शिष्यवृति (Scholarship) ली। पर दुर्भाग्य से वह चिट्ठी एक बार खो गई। ऐसी चमत्कारिक होती हैं डॉक्टर की चिठ्ठियां।

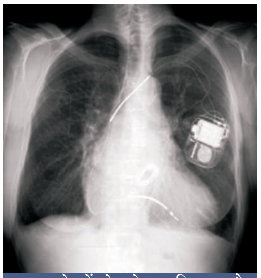

एक्स-रे में पेसमेकर दिखता है

डॉ. अजय नाईक - कार्डियाक इलेक्ट्रोफिजियोलॉजीस्ट

सौजन्य : 'दिल से' - लेखक : डॉ. केयूर परीख

केर इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

सीम्स अस्पताल

प्रिमियर मल्टी-सुपर स्पेशयलिटी ग्रीन अस्पताल

CIMS

आप के अमुल्य जीवन के लिये

हम हाजिर है... 24 x 7

At CIMS... we care

सर्वोच्य गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्य की सेवा के लिये NABH और NABL द्वारा प्रमाणित

(National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers)

NABH · NABL

150 बेड की अस्पताल में कम समय में NABH और NABL की मान्यता प्राप्त करने के लिये सीम्स अस्पताल की कुशल और प्रतिबद्ध टीम का धन्यवाद

नेशनल ऐक्रिडिशन बोर्ड फोर होस्पिटल्स एन्ड हेल्थकेर प्रोवाइडर्स (एनएबीएच) भारतीय गुणवत्ता परिषदका एक घटक बोर्ड है जिसकी स्थापना स्वास्थ्य संगठनो की पहचान स्थापित करने के लिए और उसका संचालन करने के लिए की है ।

Green Hospital

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

अपोइन्टमेन्ट के लिये फोन
सोमवार से शनिवार
(सुबह 9 से शाम 5 बजे तक)

+91-79-3010 1200, 3010 1008
email : opd.rec@cimshospital.org
info@cims.me

जल्द आ रहा है
विश्वस्तरीय, स्टेट-ऑफ-ध-आर्ट रेडियेशन ऑन्कोलॉजी/रेडियो थेरापी

सीम्स अस्पताल : शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला,
अहमदाबाद-380060. फोन : +91-79-2771 2771-75 (5 नंबर्स) फेक्स : +91-79-2771 2770

सीम्स क्लिनिक : पहली मंजिल, शांत प्रभा हाइट, वल्लभ वाडी के सामने, भैरवनाथ रोड, मणीनगर,
अहमदाबाद-380008. अपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-2544 0382-83 मोबाईल : +91-90991 82222

एम्बयुलन्स और आपातकाल
+91-98244 50000, 97234 50000, 90990 11234

www.cims.me

हम उपलब्ध है Facebook, Twitter, Blogger, Linkedin

डाउनलोड करे

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

सीम्स अस्पताल के विशेषज्ञ अब उदयपुर में

अहमदाबाद की प्रसिद्ध प्रिमियर मल्टी-सुपर स्पेशियालीटी ग्रीन अस्पताल अब से अपनी सेवाएं उदयपुर में प्रदान करेंगी ।

हर महिने के तीसरे शनिवार (मई 18, 2013)

कार्डियाक (बायपास) के सर्जन
- डॉ. धीरेन शाह
- डॉ. धवल नाइक

हर महिने के तीसरे बुधवार (मई 15, 2013)

बाल हृदय रोग के विशेषज्ञ
- डॉ. कश्यप शेठ

नलीओ के सर्जन
- डॉ. सृजल शाह

घुटने / जोड़ो के सर्जन
- डॉ. अमिर संघवी
- डॉ. अतीत शर्मा

समय : सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक
स्थान : कल्पना नर्सिंग होम, 214-सी, सरदारपुरा, उदयपुर ।

अपोइन्टमेन्ट के लिये संपर्क करे :
+91-294-2527244, 2529244
+91-294-2523191, 2418323

इस ओपीडी में हृदयरोग से संबंधित (बच्चे और बडे), लहु की नलीयो में ब्लोकेज, दिमाग की बिमारीयाँ, कमर, घुंटन, हड्डी की बिमारी, फेफडे की बिमारी वाले मरीजो की जाँच की जायेगी ।

डॉ. सत्य गुप्ता (हृदयरोग विशेषज्ञ) निम्नलिखित जगह पर हर महीनेमें एक बार परामर्श के लिये मिलेगें

महिने के तीसरे शनिवार	जोधपुर ◆ पाली
महिने के तीसरे रविवार	सुमेरपुर ◆ सीरोही ◆ आबु रोड
महिने के चौथे रविवार	भीनमाल ◆ सांचोर ◆ धानेरा

अपोइन्टमेन्ट के लिये संपर्क करे : +91-99131 99802

डॉ. विनीत सांख्रला (हृदयरोग विशेषज्ञ) निम्नलिखित जगह पर हर महीनेमें एक बार परामर्श के लिये मिलेगें

हर महिने के पहले शनिवार

जोधपुर	वसुंधरा अस्पताल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक
बालोतरा	बाबा रामदेव अस्पताल, नाहटा अस्पताल रोड दोपहर 3 से शाम 6 बजे तक

अपोइन्टमेन्ट के लिये संपर्क करे : +91-99250 15056

सीम्स अस्पताल के जोइन्ट रिप्लेसमेन्ट विशेषज्ञ जोधपुर और पालीमें अपनी सेवाएं प्रदान करेगें

हर महिने के पहले शनिवार

जोधपुर	वसुंधरा अस्पताल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक
पाली	रोज़ अस्पताल दोपहर 3 से शाम 5 बजे तक

अपोइन्टमेन्ट के लिये संपर्क करे : +91-95744 45559

सीम्स अस्पताल:

शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
ईमेलः info@cims.me वेबः www.cims.me

एम्बयुलन्स और आपातकालीन सेवायें : +91-98244 50000, 97234 50000, 90990 11234

"Hriday Aur Dhadkan" Registered under RNI No. GUJHIN/2009/28021
Published 20th of every month
Permitted to post at PSO, Ahmedabad-380002 on the 1st to 7th of every month under
Postal Registration No. GAMC-1730/2013-2015 issued by SSP Ahmedabad valid upto 31st December, 2015

If undelivered Please Return to :

CIMS Hospital, Nr. Shukan Mall,
Off Science City Road, Sola, Ahmedabad-380060.
Ph. : +91-79-2771 2771-75 (5 lines)
Fax: +91-79-2771 2770
Mobile : +91-98250 66664, 98250 66668

"हृदय और धड़कन" का अंक प्राप्त करने के लिये : अगर आपको "हृदय और धड़कन" का अंक चाहिए तो इसका मूल्य ₹ 60 (12 अंक) है । इसको प्राप्त करने के लिये केश या चेक/डीडी सीम्स होस्पिटल प्रा. ली. के नाम से और आपका नाम और पुरे पते के साथ हमारी ओफिस हृदय और धड़कन डिपार्टमेन्ट, सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 पर भेज दे । फोन नं. : +91-79-3010 1059/1060

केर इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज सीम्स अस्पताल

प्रिमियर मल्टी-सुपर स्पेशियालीटी
ग्रीन अस्पताल

Green Hospital

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
At CIMS... we care

सीम्स अस्पतालः शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.
एपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008 (मो) +91-98250 66661 ईमेल : opd.rec@cims.me
फोन : +91-79-2771 2771-75 (5 नंबर्स) फेक्स : +91-79-2771 2770
ईमेल : info@cims.me वेब : www.cims.me

एम्बयुलन्स और आपातकालीन सेवायें : +91-98244 50000, 97234 50000, 90990 11234

मुद्रक, प्रकाशक और संपादक डॉ. हेमांग बक्षी ने सीम्स अस्पताल की ओर से
हरिओम प्रिन्टरी, 15/1, नागोरी एस्टेट, ई.एस.आई डिस्पेन्सरी, दुधेश्वर रोड, अहमदाबाद-380004 से मुद्रित किया और
सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 से प्रकाशित किया।